□□□□ □□□□ □□□□

तुलसीराम ने 'दलित जातिवादी राजनीति बनाम हिंदुत्व' (जनसत्ता, 25 मई) शीर्षक से महत्त्वपूर्ण लेख लिखा। बहुजन समाज पार्टी और मायावती को केंद्र में रख कर दलित राजनीति का इतना बृहद विश्लेषण शायद ही पहले किसी ने किया हो। उन्होंने बड़ी बारीकी से चीजों को समझाते हुए दलित राजनीति की सीमाओं पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने दलित राजनीति की छत्रछाया में पलते हिंदुत्व की पहचान कर दोनों के महीन रिश्तों की पड़ताल की। जैसी कि अपेक्षा थी, सामाजिक न्याय की राजनीति से घृणा करने वाले तबके की तुलसीरामजी द्वारा दलित राजनीति की आलोचना पर बांछें खिल गईं और जैसे ही बात हिंदुत्व पर आई तो उन्हीं को निशाना बना दिया। इसी का प्रमाण है कृष्णदत्त पालीवाल की टिप्पणी- 'जातिवाद का भंवर' (8 जून)।

हाल में हुए आम चुनावों के बारे में तुलसीराम का निष्कर्ष है: ''भाजपा ने धर्म और जाति, दोनों का इस्तेमाल बड़ी रणनीति के साथ किया, जिसके पीछे वह चालाकी से 'विकास' की बात करके जनता को भ्रमित करने में सफल रही, जबकि असली मुद्दा धार्मिक ध्रुवीकरण का ही था।'' तुलसीराम ने विभिन्न तर्कों और तथ्यों के माध्यम से तमाम राजनीतिक दलों द्वारा धार्मिक और जातीय ध्रुवीकरण की कोशिशों का पर्दाफाश किया है। पालीवालजी जैसे लोगों को अन्य दलों के साथ भाजपा का भी नाम लिए जाने से आपत्ति होती है। वे कहते हैं: ''भाजपा ने हिंदुत्व और हिंदू राष्ट्रवाद- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नाम पर चुनाव नहीं लड़ा... जनता ने हिंदू-मुसलिम, अगड़ी-पिछड़ी जातियों की तोड़ने वाली राजनीति से हट कर एक क्रांतिकारी परिवर्तन का संदेश दिया।'' वे अपने लेख में इसी बात को बार-बार दुहराते हैं। ऐसा मानने वाले कृष्णदत्त पालीवाल अकेले नहीं हैं।

बसपा, सपा और जद (एकी) के सीटें न जीत पाने को मीडिया द्वारा भी इसी तरह प्रस्तुत किया गया कि अब जाति की राजनीति के दिन लद गए। जबकि यह सच नहीं है। जहां तक जाति की राजनीति का सवाल है, भाजपा हमेशा से ऊंची जातियों और हिंदुत्व की राजनीति करती रही है, उसने इस बार भी की। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि विमर्शकारों को भाजपा जाति और धर्म की राजनीति करती नहीं दिखती, जबकि सामाजिक न्याय की राजनीति करने वाले दलों पर हमेशा जातिवादी राजनीति करने का आरोप लगाया जाता रहा है।

जिन्होंने भी इस बार के चुनाव पर ठीक से नजर रखी, वे जानते हैं कि यह चुनाव जाति और धर्म की राजनीति से मुक्त नहीं था। तमाम दलों ने जाति और संप्रदाय के आधार पर ध्रुवीकरण का प्रयास किया, लेकिन इसमें सबसे ज्यादा सफलता भाजपा को मिली। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि खुद को सांस्कृतिक संगठन कहने वाले हिंदुत्ववादी 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ने नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया और भाजपा में अपनी बात मनवा ली। पूरी चुनाव प्रक्रिया में संघ के कार्यकर्ताओं ने भाजपा के लिए जम कर प्रचार किया।

संघ की सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारणा से हम सभी परिचित हैं। शायद इसीलिए चुनाव जीतते ही भाजपा ने कश्मीरी पंडितों और दूसरे देशों में अल्पसंख्यक के रूप में रह रहे हिंदुओं की चिंता शुरू कर दी, मानो भारत हिंदू-राष्ट्र हो, जिसका प्रधान कर्तव्य हिंदू हितों की रक्षा करना हो! दूसरे देशों के अल्पसंख्यकों की चिंता करने वाले दल को सबसे पहले अपने देश के अल्पसंख्यकों, दलितों और आदिवासियों की चिंता करनी चाहिए, जिन्हें उनके अधिकारों से लगातार वंचित किया गया और अपने ही देश में दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है। भाजपा ने यह चुनाव संघ की अगुआई में लड़ा। खुद संघ प्रमुख मोहन भागवत ने भाजपा के उम्मीदवारों का चयन करने वाली चुनाव समिति में भाग लिया।

नरेंद्र मोदी के चुनावी भाषणों और उनके प्रिय अमित शाह को उत्तर प्रदेश का चुनाव प्रभारी बनाए जाने का विश्लेषण करें तो काफी कुछ स्पष्ट हो

जा□गा□ वक्सि के नाम पर शुरू हु□ भाजपा के चुनाव प्रचार में फैजाबाद पहुंचते-पहुंचते राम मंदरि की आकांक्षा शामलि हो गई, जसिका प्रमाण फैजाबाद में मोदी की सभा में प्रस्तावति राम मंदरि की तस्वीर लगाना है□ क्या इसे ध्रुवीकरण नहीं कहा जा□गा? जैसे-जैसे चुनाव की आखरिी तारीख नजदीक आने लगी और सबका ध्यान पश्चमिी उत्तर प्रदेश पर टकि गया, भाजपा ने धर्म और जाति के नाम पर वोटों का ध्रुवीकरण करने की पूरी कोशशि की□ इसी इलाके में आकर सामाजकि न्याय की राजनीति को चुनौती देने के लि□ नरेंद्र मोदी ने जाति का कार्ड खेला□ प्रयिंका गांधी की □कटप्पिणी का जवाब देते हु□ जब मोदी ने यह कहा कि 'सामाजकि रूप से नचिले वर्ग से आया हूं, इसलि□ मेरी राजनीति उन लोगों के लि□ नीची राजनीति है', तो दरअसल उन्होंने सपा और बसपा के वोटों का जाति-आधारति ध्रुवीकरण करनी चाही, और ऐसा हुआ भी□

इसी तरह पूरे चुनावों के दौरान पल-पल दोहराया जाने वाला नरेंद्र मोदी के पक्ष में भाजपा का 'गंगा ने बुलाया है' वज्ञिापन याद कीजि□□ नरेंद्र मोदी के बनारस से चुनाव ल□ने और गंगा को □कप्रतीक की तरह इस्तेमाल करने को क्या कहेंगे! चुनाव जीतने के बाद उनके बारे में पहली खबर आई कि फ्लां तारीख को वे गंगा आरती के लि□ जा□ंगे□ गंगा आरती और बनारस की गलयिों में गूंजने वाला 'हर-हर मोदी' का नारा क्या सेक्युलर कहा जा सक्ता है?

तुलसीराम ने अपने लेख में ठीक ही रेखांकति कयिा कि सामाजकि न्याय की राजनीति करने वाली पार्टयिां मुसलमि तुष्टीकरण की कोशशि में लगी रहीं, जसिके फलस्वरूप भाजपा के पक्ष में हदिू वोटों का ध्रुवीकरण हुआ□ साथ ही जनि दलति और पछि□ी जातयिों तक सामाजकि न्याय की राजनीति का प्रकाश नहीं पहुंचा, वे नरिाश होकर संघ के प्रयासों से हदिुत्व की ओर मु□ीं और उन्होंने जम कर भाजपा को वोट दयिा□ यानी भाजपा ने शेष दलों की तुलना में ज्यादा चालाकी से जाति और संप्रदाय के आधार पर वोटों का ध्रुवीकरण कयिा□ चुनाव से पहले होने वाले दंगे भी वोटों के ध्रुवीकरण के लि□ करा□ जाते हैं□ चुनाव वश्लिेषक बताते हैं कि लोकसभा चुनाव और पांच राज्यों में वधिानसभा चुनावों से पहले उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर के साथ-साथ तीन दर्जन और दंगे हु□, मध्यप्रदेश के इंदौर और हरदा में, बहिार के नवादा और बेतयिा में, जम्मू के कश्तिवा□ और असम के सलिचर में सांप्रदायकि हसिा की घटना□ हुरइं□

इस तथ्य को प□कर अनायास गोरख पांडेय की कवति की ये पंक्तयिां याद आती हैं, 'इस बार दंगा बहुत ब□ा था/ खूब हुई थी/ खून की बारशि/ अगले साल अच्छी होगी/ फसल/ मतदान की□' इन दंगों में हाथ कई पार्टयिों का रहा, लेकनि लाभ □कपार्टी को ज्यादा मलि□

भाजपा ने उदति राज और रामवलिास पासवान जैसे नेताओं से हाथ मलि कर दलति मतदाताओं को लुभाया□ क्या यह महज संयोग था कि बाबा रामदेव ने दलति स्त्रयिों के खलिाफ आपराधकि बयान दि□ और उनके बचाव में दशकों से दलति राजनीति कर रहे उदति राज को उतारा गया? इस आम चुनाव में भाजपा के पक्ष में मुख्य रूप से ऊंची जातयिों का ध्रुवीकरण हुआ, पर कुछ इलाकों में दलति और पछि□ी जातयिों का भी□ हदिुत्व भी चुनाव के इर्द-गर्दि घूमता रहा□

काश, तुलसीराम की तरह आत्मालोचन का साहस कृष्णदत्त पालीवाल भी कर पाते और भारतीय राजनीति में धर्म और जाति के न□ अवतार को समझ पाते, जो 'वक्सि' की खाल ओ□कर आया है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta